

बिहार के जिलों में हालिया पुरातात्विक अन्वेषणों पर एक प्रारंभिक रिपोर्टRaushan Kumar^{1*}, Dr Anant Prasad Gupta^{2**}

1. Research Scholar,

2. Professor

* Faculty of Social Science (Department of History), Purnea University, Purnea, Bihar, India

**Faculty of Social Science (Department of History), Purnea University, Purnea, Bihar, India

Corresponding Author: Raushan Kumar,

Email- raushankumar1421986@gmail.com

सारांश:

डब्ल्यू. हंटर द्वारा 1877 में चिरांद पुरातात्विक स्थल की खोज सारण ज़िले (बिहार) में एक प्राचीन बसावट की पहली खोज थी। यह ऐतिहासिक खोज, तथा इसके पश्चात स्थल पर हुई पुरातात्विक अन्वेषणों और उत्खननों ने मध्य गंगा मैदान में पुरातत्व अनुसंधान की नींव रखी। यह शोधपत्र लेखक द्वारा बिहार के सारण ज़िले में किए गए क्षेत्रीय अन्वेषणों से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्यों को प्रस्तुत करता है। इस क्षेत्रीय अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ज़िले में प्रारंभिक कृषि-पालतू पशुपालन आधारित बस्तियों का दस्तावेज़ीकरण करना था। इस अन्वेषण के दौरान नवपाषाण (Neolithic) और ताम्रपाषाण (Chalcolithic) काल की बस्तियों के साथ-साथ बाद की सांस्कृतिक अवधियों के प्रमाण भी प्राप्त हुए।

[Kumar, R. and Gupta, A.P. **बिहार के जिलों में हालिया पुरातात्विक अन्वेषणों पर एक प्रारंभिक रिपोर्ट.** *The International Journal of Interpretation, Observation and Analysis*, 2025; Volume 3, Issue 1:78-83 (July-September). ISSN 2349-0713, Peer-reviewed (online/offline), Refereed, Indexed and International Journal (Since 2013), Global Impact Factor: 5.776

प्रमुख शब्द:

चिरांद, नवपाषाण काल, ताम्रपाषाण काल, उत्तरी काले पॉलिथ किए हुए बर्तन (एन.बी.पी. डब्ल्यू), बसावट प्रतिरूप, जीवन निर्वाह रणनीतियाँ, सांस्कृतिक निरंतरता

परिचय (Introduction) — हिंदी अनुवाद

बिहार के जिलों सारण ज़िला भौगोलिक रूप से 25°36' उत्तरी अक्षांश और 26°13' उत्तरी अक्षांश तथा 84°24' पूर्वी देशांतर और 85°15' पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है, और इसका कुल क्षेत्रफल 2,641 वर्ग किलोमीटर है (ज़िला जनगणना पुस्तिका, 2011)। ज़िले की भौगोलिक संरचना पर विचार करते हुए, यह प्रमुख नदियों जैसे गंगा (दक्षिण में), गंडक (पूर्व में) और घाघरा (पश्चिम में) से घिरा हुआ है। इस ज़िले का भू-आकृतिक स्वरूप त्रिकोणीय है, जिसका शीर्ष बिंदु इन तीन नदियों के संगम द्वारा निर्मित होता है (ओमैली, 1908)। यह क्षेत्र एक विस्तृत जलोढ़ मैदान द्वारा विशेषित है, जिसे गंगा, घाघरा, गंडक और सोन जैसी बड़ी नदियाँ घेरती हैं, तथा इन नदियों की छोटी धाराएँ और नाले इस क्षेत्र को दक्षिण-पूर्व की दिशा में काटते हुए बहती हैं।

हालांकि यह ज़िला समतल मैदान के रूप में दिखाई देता है और यहाँ खादर तथा भांगर की जलोढ़ मिट्टियाँ पाई जाती हैं, फिर भी इस एकरूपता को विभिन्न अवसादों, दलदलों और अर्धचंद्राकार झीलों (ऑक्स-बो झीलों) की उपस्थिति बाधित करती है (सिंह, 1971)।

पूर्ववर्ती अनुसंधान (Previous Research) — हिंदी अनुवाद जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, इस क्षेत्र में स्थित प्राचीन बस्ती चिरांद की खोज सर्वप्रथम डब्ल्यू. हंटर द्वारा 1877 में की गई थी। इसके पश्चात, 1877 से 1880 के बीच

कार्लाइल ने इस स्थल का सर्वेक्षण किया, और 1954 में अल्लेकर द्वारा इसकी दोबारा जाँच की गई।

पूर्ववर्ती अनुसंधान (Previous Research) — हिंदी अनुवाद (जारी)

कार्लाइल (1885) और अल्लेकर (1954) ने इस स्थल को एक प्राचीन नगर के अवशेषों के रूप में वर्णित किया। इसके बाद भी कई विद्वानों ने इस स्थल का दौरा किया और उसका अध्ययन किया, जिनमें ह्योए (1900), नंदलाल डे (1903), और वर्मा (2007) शामिल हैं।

हिंदी अनुवाद:

हालांकि इस स्थल पर पुरातात्विक खुदाई का कार्य बिहार सरकार के **पुरातत्व एवं संग्रहालय निदेशालय** द्वारा 1961 से 1971 तक किया गया था (IAR 1962-63: 6; IAR 1963-64: 6-8; IAR 1964-65: 6-7; IAR 1968-69: 5-6; IAR 1969-70: 3-4; IAR 1970-71: 6-7; वर्मा 1980-81, 2007)। इसके बाद इस स्थल की पुनः खुदाई **पटना विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विभाग** द्वारा 1980-82 में की गई (IAR 1980-81: 9-10, 1981-82: 13-14; सिन्हा 1994)। वर्ष 2019 में, चिरांद स्थल की एक बार फिर से खुदाई **डेक्कन कॉलेज पोस्ट-ग्रेजुएट एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी), पुणे** द्वारा, **बिहार युवा एवं संस्कृति विभाग, पटना** के सहयोग से की गई (शिर्वालकर आदि, प्रकाशनाधीन)।

चिरांद स्थल की कालक्रम (chronology) की स्थापना कार्बन-14 (C14) तिथियों, विभिन्न सांस्कृतिक कालों की मिट्टी के बर्तनों की तुलना, तथा खुदाई में प्राप्त मुद्राओं, मुहरों, सिक्कों और अन्य पुरावशेषों के विश्लेषण से की गई है। इन सांस्कृतिक सामग्रियों के तुलनात्मक अध्ययन से कालक्रम को पाँच विशिष्ट सांस्कृतिक कालों में विभाजित किया गया है:

- काल I (IA और IB): नवपाषाण काल (Neolithic)
- काल II: ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic)
- काल III: उत्तरी काले पॉलिशदार मृद्भांड काल (Northern Black Polished Ware / NBPW)
- काल IV: कुषाण-गुप्त काल (Kushana-Gupta)
- काल V: प्रारंभिक मध्यकालीन काल (Early Medieval)

(IAR 1981-82: 13-14; वर्मा 2007)

चिरांद से प्राप्त कार्बन-14 तिथियाँ इस ओर संकेत करती हैं कि यहां की प्रारंभिक बस्ती ईसा पूर्व तीसरी सहस्राब्दी के अंत में आरंभ हुई थी, जो प्रारंभिक मध्यकालीन काल तक निरंतर बनी रही।

इसके अतिरिक्त, मानझी नामक पुरातात्विक स्थल की खोज 1967-68 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के मिड-ईस्टर्न सर्किल के बी. सरन द्वारा की गई थी (IAR 1967-68: 9)। इस स्थल की खुदाई काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के टी. एन. राय द्वारा 1983-84 और 1984-85 में कराई गई थी (IAR 1983-84: 15-16; IAR 1984-85: 12-13; राय 1987)। खुदाई से यहां तीन सांस्कृतिक काल का पता चला:

- काल I: ब्लैक स्लिपड वेयर संस्कृति
- काल II: उत्तरी काले पॉलिशदार मृद्भांड (NBPW)
- काल III: शक-कुषाण काल (IAR 1984-85: 12-13)

बाद में राय (1987) ने इन सांस्कृतिक कालों को चार कालखंडों में विभाजित किया:

- काल I: ब्लैक स्लिपड वेयर संस्कृति
- काल II: NBPW (जिसे तीन उप-कालों IIA, IIB, और IIC में बांटा गया: 600 ई.पू. से 50 ई.पू.)
- काल III: 50 ई.पू. से 300 ई.
- काल IV: मध्यकालीन काल

बाद में, के. पी. जयसवाल शोध संस्थान, पटना द्वारा डॉ. विजय के. चौधरी के नेतृत्व में सारण ज़िले में एक पुरातात्विक सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण के दौरान ज़िले में नवपाषाण काल से लेकर मध्यकाल तक के कुछ प्राचीन स्थलों की पहचान की गई (स्रोत: <https://kjpri.res.in/wp-content/uploads/2021/06/Catalogue-A-Ex-Volume2.pdf>)। इस अध्ययन के निष्कर्षों से यह संकेत मिला कि यह जिला प्रारंभिक कृषि-पशुपालक समुदायों के

पुरातात्विक साक्ष्य को संजोए हुए है और इसके माध्यम से समय के साथ विकसित होने वाली सांस्कृतिक अवधियों की समझ को बढ़ाया जा सकता है।

अब तक इस अध्ययन क्षेत्र में किए गए पुरातात्विक अनुसंधानों को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि नवपाषाण और ताम्रपाषाण कालीन बस्तियों को समझने के लिए अभी भी सीमित सर्वेक्षण ही किए गए हैं। इन कालों से संबंधित कुछ ही स्थलों की खुदाई हुई है। हालांकि अध्ययन क्षेत्र में खोजे गए और खुदाई किए गए नवपाषाण और ताम्रपाषाण स्थलों की उपस्थिति है, फिर भी बस्ती वितरण के पैटर्न, रणनीतियों और अन्य समकालीन बस्तियों के साथ उनके सांस्कृतिक व व्यापारिक संपर्कों के संदर्भ में अब भी बहुत कुछ ज्ञात नहीं है।

जैसा कि पूर्व में चर्चा की गई है, चिरांद में की गई खुदाइयों से यह स्पष्ट होता है कि यहां पर नवपाषाण काल से लेकर प्रारंभिक मध्यकाल तक निरंतर मानवीय गतिविधियां रही हैं। इसके अलावा, चिरांद और मानझी (वर्मा 2007; राय 1987) दोनों स्थलों की खुदाई से यह जानकारी मिली है कि प्रारंभिक निवासियों का जीवन-यापन, आहार संबंधी आदतें और उनका विभिन्न हस्तशिल्पों—जैसे मनकों का निर्माण, मिट्टी के बर्तन बनाना, हड्डियों के औज़ार बनाना और कृषि—में गहरा संलिप्तता रही है। खुदाई से प्राप्त साक्ष्यों से उनकी बस्तियों की प्रकृति और कालक्रम की भी बेहतर समझ मिलती है।

फिर भी यह गहन जानकारी ज़िले के शेष हिस्सों तक नहीं पहुंचती है। इसलिए, अब तक सारण ज़िले में किए गए अनुसंधानों और चिरांद एवं मानझी जैसे स्थलों की उपस्थिति को ध्यान में रखते हुए यह पूरी तरह संभव है कि इस क्षेत्र में नवपाषाण और ताम्रपाषाण काल से संबंधित समकालीन अन्य बस्तियां भी विद्यमान रही हों—जिनके लिए व्यापक क्षेत्रीय सर्वेक्षण की आवश्यकता है।

अन्वेषण और सर्वेक्षण की आवश्यकता इसलिए, यह अत्यंत आवश्यक हो गया है कि पूर्व में प्रलेखित स्थलों की पुनः समीक्षा की जाए और इस क्षेत्र में एक व्यापक एवं गहन पुरातात्विक अन्वेषण किया जाए। प्रस्तुत शोधपत्र बिहार के सारण ज़िले में हाल ही में किए गए पुरातात्विक अन्वेषणों से प्राप्त निष्कर्षों पर प्रारंभिक टिप्पणियाँ प्रस्तुत करता है।

मैदानी अन्वेषण (Field Investigation)

अध्ययन क्षेत्र में मैदानी अन्वेषण का पहला चरण 2020 में मध्य फरवरी से मध्य मार्च के बीच किया गया था। प्रारंभिक सर्वेक्षण के दौरान नौ प्रखंडों का सर्वेक्षण किया गया, जिनमें शामिल हैं:

- एकमा
- लहलादपुर
- पानापुर
- तरैया

- मेकर
- परसा
- दरियापुर
- सोनपुर
- अमनौर

इसके बाद के मैदानी सत्र में ग्यारह प्रखंडों को कवर किया गया, जिनमें शामिल हैं:

- दिघवारा
- छपरा
- गरखा
- रिविलगंज

सर्वेक्षण के परिणाम (Results of the Survey) – हिंदी अनुवाद

मैदानी अन्वेषण के दौरान कुल 44 पुरातात्विक स्थलों का पता लगाया गया, जिनमें से 11 स्थलों की पुनः यात्रा (revisiting) की गई (चित्र 1)। इस सर्वेक्षण से प्राप्त साक्ष्य बताते हैं कि ये पुरातात्विक स्थल नवपाषाण काल से लेकर प्रारंभिक मध्यकाल तक की विभिन्न सांस्कृतिक अवधियों को दर्शाते हैं। हालांकि कुछ स्थानों पर कोई स्पष्ट पुरावशेष प्राप्त नहीं हुए, केवल कुछ मृद्भांडों (ceramics) के शरीर खंड (body sherds) ही सतह पर पाए गए।

इन 44 स्थलों में से 12 स्थलों से नवपाषाण (Neolithic) और ताम्रपाषाण (Chalcolithic) दोनों सांस्कृतिक चरणों के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

ये बस्तियाँ सामान्यतः प्राकृतिक रूप से ऊँचे जलोढ़ मैदानों (elevated alluvial plains) पर स्थित पाई गईं। प्रमुख स्थलों में चिरांद, गोदाना, अकबरपुर, सीतलपुर और मांझी शामिल हैं, जो गंगा, घाघरा और डाबरा नदियों के किनारे स्थित हैं (चित्र 1)। कुछ मामलों में, ये प्राचीन बस्तियाँ आज आधुनिक बस्तियों द्वारा आच्छादित हैं। हालांकि, अधिकांश स्थल आंशिक या पूर्ण रूप से कृषि कार्यों या आवासीय और सार्वजनिक निर्माण गतिविधियों के कारण क्षतिग्रस्त हो चुके हैं।

- मांझी
- नगरा
- जलालपुर
- मढ़ौरा
- बनियापुर
- इसूपुर
- मशरक

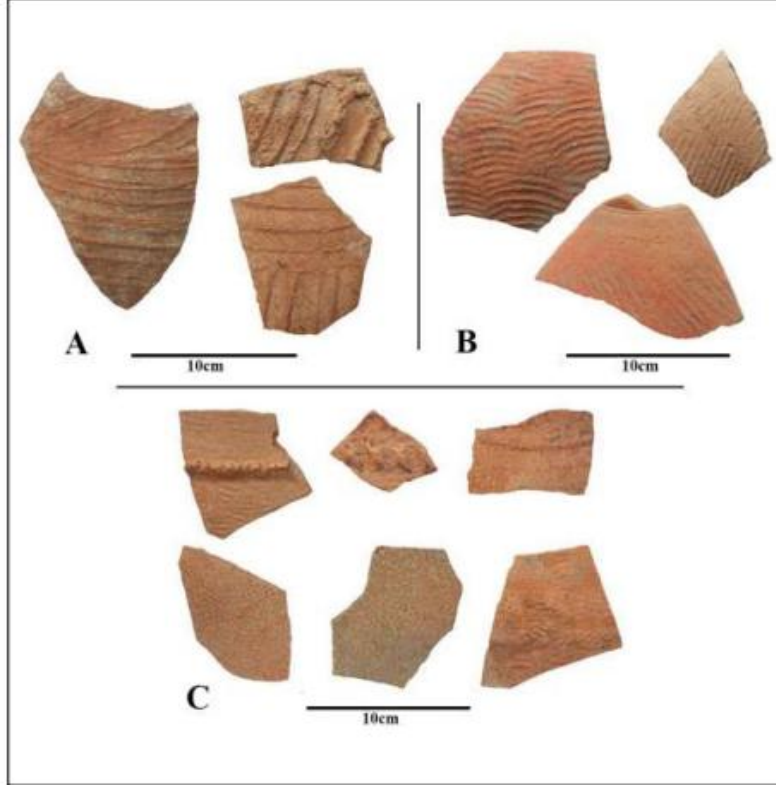
इस सर्वेक्षण का एक महत्वपूर्ण भाग पूर्व में खोजे गए और खुदाई किए गए स्थलों की पुनः यात्रा (revisiting) भी रहा, जो प्रस्तावित अध्ययन क्षेत्र में स्थित हैं।

चित्र 1 में दी गई स्थलों की सूची में से कुछ स्थलों की सूचना पहले के. पी. जयसवाल अनुसंधान संस्थान, पटना द्वारा दी गई थी, और उन्हें विभिन्न सांस्कृतिक अवधियों से संबंधित माना गया है। इन स्थलों में शामिल हैं:

- खैरा (Khaira) और बजहिया (Bajahia) – जो प्रारंभिक मध्यकालीन काल (Early Medieval Period) से संबंधित हैं।
- पाहारपुर (Paharpur), कचनार (Kachanar), बड़ा टेलपा (Bada Telpa), सीतलपुर (Sitalpur), अकबरपुर (Akbarpur) और गोदाना (Godana) – ये सभी उत्तरी काले पॉलिश मृद्भांड (Northern Black Polished Ware – NBPW) सांस्कृतिक चरण से संबंधित हैं।
- ध्यानपूर्वक अध्ययन के अनुसार, के. पी. जयसवाल अनुसंधान संस्थान, पटना द्वारा प्रकाशित विवरणिका (Catalogue A-Ex Volume 2) में महमदपुर (Mahamadpur) को ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic Period) से संबंधित माना गया है।
- इस प्रकार, अब तक की फील्ड जांच और पूर्ववर्ती अनुसंधान के आधार पर, संबंधित सांस्कृतिक कालों के अनुसार कुछ प्रमुख स्थलों की सूची निम्नलिखित है:

स्थल का नाम	सांस्कृतिक काल	स्रोत संस्थान
खैरा (Khaira)	प्रारंभिक मध्यकालीन (Early Medieval)	KPJRI, पटना
बजायिया (Bajahia)	प्रारंभिक मध्यकालीन (Early Medieval)	KPJRI, पटना
पाहारपुर (Paharpur)	उत्तरी काले पॉलिश मृद्भांड (NBPW)	KPJRI, पटना
कचनार (Kachanar)	उत्तरी काले पॉलिश मृद्भांड (NBPW)	KPJRI, पटना
बड़ा टेलपा (Bada Telpa)	उत्तरी काले पॉलिश मृद्भांड (NBPW)	KPJRI, पटना
सीतलपुर (Sitalpur)	उत्तरी काले पॉलिश मृद्भांड (NBPW)	KPJRI, पटना
अकबरपुर (Akbarpur)	उत्तरी काले पॉलिश मृद्भांड (NBPW)	KPJRI, पटना

स्थल का नाम	सांस्कृतिक काल	स्रोत संस्थान
गोदाना (Godana)	उत्तरी काले पॉलिश मृद्भांड (NBPW)	KPJRI, पटना
महमदपुर (Mahamadpur)	ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic)	KPJRI, पटना



यह चित्र महमदपुर स्थल पर पाए गए ताम्रपाषाण कालीन सांस्कृतिक साक्ष्यों की विशिष्टता को दर्शाता है। इन विशिष्ट मृद्भांडों की उपस्थिति यह संकेत देती है कि यहाँ पर आरंभिक कृषि-पालन समुदायों का स्थायी निवास रहा होगा। विशेषकर **कॉर्ड इम्प्रेसड वेयर** और **रस्टिकेटेड वेयर** आमतौर पर नवपाषाण से ताम्रपाषाण संक्रमण काल के सिरेमिक सांस्कृतिक विकास के प्रमुख संकेतक माने जाते हैं।

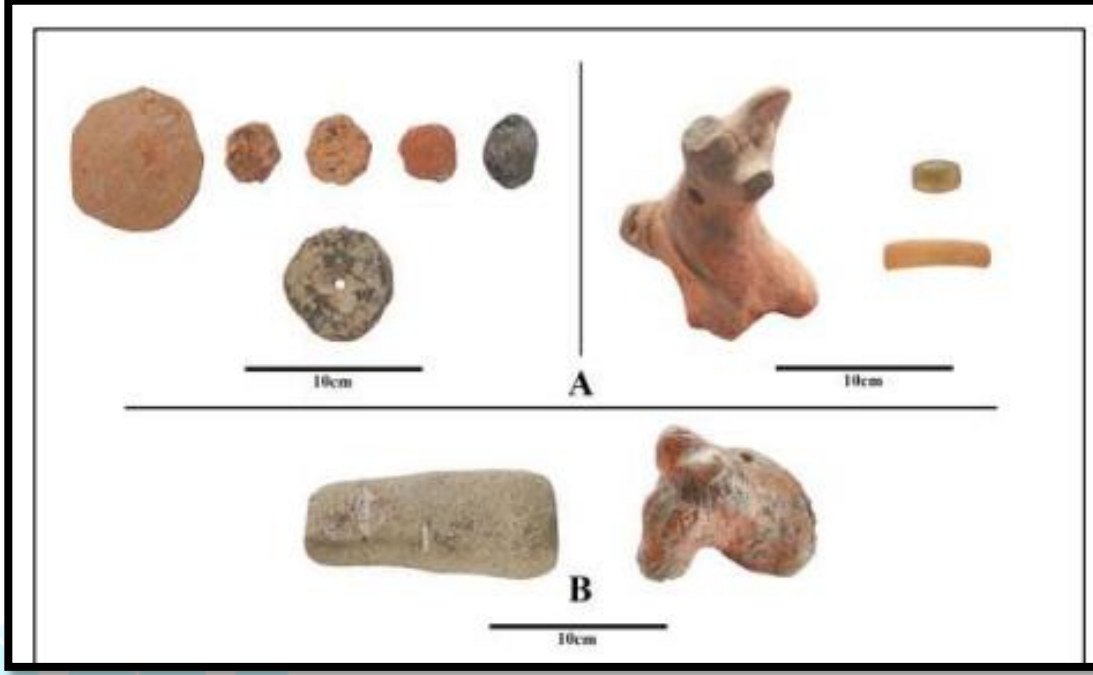
हालिया सर्वेक्षण से प्राप्त पुरातात्विक निष्कर्ष

हाल ही में किए गए पुरातात्विक सर्वेक्षण में हस्तनिर्मित और चाक पर बने दोनों प्रकार के मृद्भांडों (सिरेमिक वस्तुओं) का साक्ष्य प्राप्त हुआ है, जो नवपाषाण एवं ताम्रपाषाण कालों के

दौरान सांस्कृतिक निरंतरता और तकनीकी प्रगति को दर्शाते हैं। इस मृद्भांड संग्रह में विभिन्न प्रकार के **लाल मृद्भांड** सम्मिलित हैं—जिनमें बिना उपचारित (Untreated), लाल रंग से धुले (Red Wash), लाल फिसाहट युक्त अपॉलिश (Red Slipped Unburnished) तथा लाल फिसाहट युक्त पॉलिश किए गए (Red Slipped Burnished) भांड प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त, **काले/धूसर मृद्भांड** (बिना उपचारित, काले फिसाहट युक्त अपॉलिश, और काले फिसाहट युक्त पॉलिशयुक्त) तथा **काले-लाल मृद्भांड** भी पाए गए हैं। विशेष रूप से, लाल मृद्भांडों में **रस्सी की छाप**, **कछुए की खोल जैसी छाप**, तथा **रस्टिकेटेड (खुरदरी सतह युक्त)** नमूने भी प्राप्त हुए हैं (चित्र 3-4)।

मृद्भांडों के अतिरिक्त, क्षेत्रीय अन्वेषण के दौरान विभिन्न लघु पुरावशेष भी प्राप्त हुए हैं। इनमें **टेराकोटा से निर्मित कंगन के टुकड़े**, **पशु आकृतियाँ**, **गिल्लीडंडा (Hopscotch) के टुकड़े** तथा **सूत कातने की मटकी (Spindle-whorl)** सम्मिलित हैं। इसके साथ ही पाषाण

निर्मित मुसल तथा अर्द्ध-कीमती पत्थरों से निर्मित मनके (Beads) भी पाए गए, जो उस समय की जटिल भौतिक संस्कृति और शिल्प कौशल का संकेत देते हैं (चित्र 5)।



चित्र

5: A. महमदपुर से प्राप्त टेराकोटा निर्मित गिल्लीडंडा (Hopscotch), सूत कातने की मटकी (Spindle Whorl), पशु आकृति, कंगन का टुकड़ा तथा अर्द्ध-कीमती पत्थर से निर्मित मनका।

B. सीतलपुर से प्राप्त बालू-पत्थर से निर्मित मुसल तथा टेराकोटा से बनी पशु आकृति।

सारांश

जैसा कि पूर्व में चर्चा की गई है, हालिया क्षेत्रीय अन्वेषणों से नवपाषाण काल से लेकर मध्यकाल तक फैले हुए कई पुरातात्विक स्थलों का पता चला है। अध्ययन क्षेत्र में नवपाषाण और ताम्रपाषाण काल से संबंधित पुरातात्विक स्थलों की उपस्थिति, साथ ही मध्यकाल तक की सांस्कृतिक अवस्थाओं को दर्शाने वाले निवास स्थलों का साक्ष्य, इस क्षेत्र में सांस्कृतिक विकास की निरंतरता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। यह सांस्कृतिक विकास नवपाषाण काल से ताम्रपाषाण काल में संक्रमण, तत्पश्चात् एनबीपीडब्ल्यू (Northern Black Polished Ware) चरण, और फिर क्रमशः शृंग-कुषाण, गुप्त, तथा प्रारंभिक मध्यकालीन कालों की ओर अग्रसर होते हुए देखा गया है। ये निष्कर्ष इस क्षेत्र में प्रारंभिक कृषक-पशुपालक अवस्था से लेकर निरंतर सांस्कृतिक विकास को समझने के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र का भू-दृश्य कृषि गतिविधियों की व्यापक संभावनाओं एवं विविध निर्वाह रणनीतियों के लिए उपयुक्त है, जिसका प्रमुख कारण यहाँ की जलोढ़ मैदानों की उपलब्धता, तथा दलदली क्षेत्र, ऑक्सबो झीलें, नदियाँ, और जलधाराएँ हैं। नवपाषाण और ताम्रपाषाण काल के इन प्रारंभिक निवासियों की निर्वाह रणनीतियाँ मुख्यतः पर्यावरणीय परिस्थितियों, पारिस्थितिकीय कारकों तथा खाद्य संसाधनों की उपलब्धता और पहुँच पर आधारित थीं। अध्ययन क्षेत्र में इन कालों के निवास स्थलों और उनके निर्वाह तंत्रों की मुख्य विशेषताएँ कृषि पद्धतियाँ तथा पशुपालन थीं। इसके अतिरिक्त, ये निवासी शिकार, मछली पकड़ने, और ऋतु-विशिष्ट स्थानीय खाद्य संसाधनों के संग्रहण जैसे पूरक गतिविधियों में भी संलग्न रहते थे।

प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता ने इन निवास स्थलों के भौगोलिक स्थान निर्धारण को भी प्रभावित किया, जो रणनीतिक रूप से प्रमुख नदियों—जैसे गंगा, घाघरा, गंडक, और डबरा तथा उनकी सहायक नदियों—के निकट स्थित प्राकृतिक रूप से ऊँचे जलोढ़ मैदानों पर बसे हुए थे। वर्तमान अध्ययन क्षेत्र में किए गए क्षेत्रीय अन्वेषण ने सांस्कृतिक प्रक्रियाओं को समझने की नई संभावनाओं के द्वार खोले हैं। निवास प्रतिमान (settlement patterns), नृवंशविज्ञानात्मक प्रलेखन (ethnographic documentation), तथा कालानुक्रमिक विकास

(chronological development) के आगे के विश्लेषण से इस क्षेत्र के पुरातत्त्व के पहले अज्ञात पहलुओं पर प्रकाश डाला जा सकता है।

इस क्षेत्र में लगातार क्षेत्रीय अन्वेषण एवं शोध अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि अतिरिक्त आंकड़े इस क्षेत्र के पुरातात्विक ज्ञान को उल्लेखनीय रूप से समृद्ध कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

- अल्लेकर, ए. एस. (1954). *चिरांद पर अन्वेषण रिपोर्ट*. पटना: के. पी. जायसवाल रिसर्च इंस्टीट्यूट।
- कार्लायल, ए. सी. एल. (1885). *गोरखपुर, सारण और गाज़ीपुर में 1877-78-79 और 80 में किए गए पर्यटन की रिपोर्ट* (खंड XXII)। कलकत्ता: भारत सरकार मुद्रणालय के अधीक्षक।
- डे, एन. एल. (1903). *रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की जर्नल*, खंड 33।
- बिहार जनगणना संचालन निदेशालय। (2011). *जिला जनगणना पुस्तिका – सारण (श्रृंखला-11, भाग XII-B)*। बिहार: जनगणना संचालन निदेशालय।
- होए, डब्ल्यू. (1900). *रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की जर्नल*, खंड 30, पृष्ठ 77।
- <https://kpjri.res.in/wp-content/uploads/2021/06/Catologue-A-Ex Volume2.pdf>
- हंटर, डब्ल्यू. डब्ल्यू. (1877). *बंगाल का सांख्यिकीय विवरण* (खंड XI, पृष्ठ 357)। लंदन: ट्रबनर एंड कंपनी।
- भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण। *Indian Archaeology: A Review (IAR)*। नई दिल्ली: भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण।
- ओ'मैली, एल. एस. एस. (1908). *बंगाल जिला गजेटियर: सारण* कलकत्ता: बंगाल सचिवालय पुस्तक भंडार।
- रॉय, टी. एन. (1987). *मांझी में 1983-85 के उत्खनन की प्रारंभिक रिपोर्ट*, पुरातत्त्व, खंड 16, पृष्ठ 29-32।
- शिर्वलकर, पी., पी. हटकर, आर. के. वर्मा, ई. प्रसाद, टी. तांबोली, ए. बिस्वास, एम. एल. खान, एफ. बाली, ए. के. वर्मा, ए. के. (प्रेस में)। *चिरांद (2019), सारण जिला, बिहार, भारत में उत्खनन की रिपोर्ट, हेरिटेज: जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज़ इन आर्कियोलॉजी*।
- सिंह, आर. एल. (1971). *भारत: एक क्षेत्रीय भूगोला वाराणसी: नेशनल ज्योग्राफिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया*।
- सिन्हा, एच. पी. (1994). *उत्तर बिहार का पुरातत्त्व एवं सांस्कृतिक इतिहास* नई दिल्ली: रामानंद विद्या भवन।
- वर्मा, बी. एस. (1980-81). *पूर्वी भारतीय नवपाषाण संस्कृति में चिरांद, बिहार पुराविद परिषद की जर्नल*, खंड 4 और 5, पृष्ठ 78-89।
- वर्मा, बी. एस. (2007). *चिरांद उत्खनन रिपोर्ट* पटना: पुरातत्त्व निदेशालय, युवा, कला एवं संस्कृति विभाग, बिहार सरकार।